



छत्तीसगढ़ की ढोकरा शिल्पकला के विकास में पुरुष एवं महिला कलाकारों का योगदान

देवानन्द गुप्ता : शोधार्थी

डॉ.गौरीशंकर चौहान

ललित कला एवं संगीत विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर (उ. प्र.)

सारांस

छत्तीसगढ़ की ढोकरा शिल्पकला भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो "मोम की खोई हुई ढलाई विधि" (लॉस्ट वैक्स प्रोसेस) पर आधारित है। यह लोककला अपने अद्वितीय डिजाइनों और पारंपरिक तकनीक के कारण न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी विख्यात है। इस कला के विकास, संरक्षण, और विस्तार में पुरुष और महिला कलाकारों की सामूहिक भागीदारी ने इसे एक विशिष्ट पहचान दिलाई है। पुरुष कलाकारों ने इस कला की तकनीकी जटिलताओं में सुधार लाते हुए इसे आधुनिक समय के अनुरूप विकसित किया। धार्मिक और सांस्कृतिक शिल्पों के निर्माण, धातु ढलाई प्रक्रिया के परिष्करण, और वैश्विक स्तर पर इस कला के प्रचार-प्रसार में उनका योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने परंपरागत विधियों को संरक्षित करते हुए नई तकनीकों को अपनाकर इस शिल्प को व्यापक पहचान दिलाई है।

महिला कलाकारों ने भी इस कला की सूक्ष्मता, कलात्मकता, और डिजाइनों में सांस्कृतिक प्रतीकों के समावेश के माध्यम से इसे समृद्ध किया है। वे न केवल पारंपरिक विधियों को जीवंत बनाए रखने में सफल रही हैं, बल्कि नई डिजाइन शैलियों और बाजार की मांगों के अनुसार इसे आधुनिक स्वरूप देने में भी उनकी भूमिका अहम रही है।

यह शोध पत्र ढोकरा शिल्पकला के विकास में पुरुष और महिला कलाकारों की भूमिका को रेखांकित करता है। इसमें यह बताया गया है कि कैसे उनके सामूहिक प्रयासों ने इस कला को एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित किया और इसे आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम बनाया। साथ ही, यह अध्ययन ढोकरा कला की तकनीकी, सांस्कृतिक, और सामाजिक विशेषताओं को उजागर करता है, जो इसे भारतीय शिल्पकला का एक अनमोल हिस्सा बनाते हैं।

प्रमुख शब्द- ढोकरा शिल्पकला, तकनीक, विकास, योगदान, परिष्करण

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ की ढोकरा शिल्पकला, जो "मोम की खोई हुई ढलाई विधि" (लॉस्ट वैक्स प्रोसेस) पर आधारित है, भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और शिल्प धरोहर का अभिन्न हिस्सा है। इस प्राचीन लोककला ने अपनी विशिष्ट तकनीक, अद्वितीय डिजाइन, और कलात्मकता के कारण न केवल स्थानीय बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रसिद्धि प्राप्त की है। ढोकरा शिल्पकला के निर्माण में पुरुष और महिला कलाकारों की सामूहिक भागीदारी इस कला को जीवंत बनाए रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

पुरुष कलाकारों ने इस कला की तकनीकी जटिलताओं और नवाचारों में विशेष योगदान दिया है। उन्होंने धातु ढलाई प्रक्रिया को परिष्कृत करते हुए इसे समय के साथ अधिक सटीक और उपयोगी बनाया। धार्मिक और सांस्कृतिक शिल्पों के निर्माण, नए डिजाइनों के समावेश, और इस कला को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने में उनकी भूमिका उल्लेखनीय रही है। दूसरी ओर, महिला कलाकारों का योगदान इस कला की सूक्ष्मता, डिजाइन के सौंदर्य, और इसे पारंपरिकता के साथ आधुनिकता से जोड़ने में अहम रहा है। महिलाएँ इस कला की पारंपरिक

विधियों को संरक्षित करने के साथ-साथ नई अलंकरण शैली को अपनाने में भी अग्रणी रही हैं। इसके अतिरिक्त, वे ढोकरा शिल्पकला को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने और इसे स्थानीय व वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

उद्देश्य

1. ढोकरा शिल्पकला के विकास में पुरुष एवं महिला कलाकारों की योगदान का विश्लेषण।
2. पारंपरिक विधियों और आधुनिक तकनीकों के समन्वय का मूल्यांकन।
3. ढोकरा शिल्पकला के माध्यम से महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक स्थिति में सुधार का आकलन।
4. ढोकरा शिल्पकला को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में कलाकारों के प्रयासों का अध्ययन।

शोध प्राविधि

यह अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीय समकों पर आधारित है, प्राथमिक समकों के संकलन हेतु ढोकरा कलाकारों, विशेषज्ञों से साक्षात्कार किया गया तथा ढोकरा शिल्पकला निर्माण प्रक्रिया का प्रत्यक्ष अवलोकन भी किया गया। द्वितीय समकों के संकलन हेतु शोध ग्रंथों, पुस्तकों, पहले से प्रकाशित शोध पत्र पत्रिकाओं, एवं वेबसाइट्स ई जनरल्स आदि का प्रयोग किया गया है। यह शोध पत्र छत्तीसगढ़ की ढोकरा शिल्पकला के विकास में पुरुष एवं महिला कलाकारों की भूमिका, उनके योगदान के विभिन्न आयामों, और इस कला के संरक्षण व प्रसार में उनके प्रयासों पर केंद्रित है। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि कैसे सामूहिक प्रयासों ने इस कला को आज एक सांस्कृतिक और आर्थिक धरोहर के रूप में स्थापित किया है।

ढोकरा शिल्पकला के विकास में महिला और पुरुष दोनों कलाकारों का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। इस कला के हर चरण में परिवार के सभी सदस्य सक्रिय रूप से शामिल होते हैं, जिसमें महिलाएँ और बच्चे भी अपने-अपने योगदान देते हैं। कच्चे माल की आपूर्ति से लेकर मिट्टी तैयार करने, कलाकृतियों का निर्माण और उनकी बिक्री तक, परिवार के प्रत्येक सदस्य की भूमिका अहम होती है। हालांकि, कुछ कार्य ऐसे होते हैं जिनमें प्राचीन और आधुनिक दोनों समयों में पुरुषों का योगदान अधिक रहा है, क्योंकि इनमें शारीरिक ताकत की आवश्यकता पड़ती है। उदाहरण के तौर पर, पिघली हुई धातु को सांचे में ढालना या भट्टी के लिए गड्ढा खोदना आदि शामिल है। वर्तमान समय में कुछ महिलाएँ भी इन कार्यों में हाथ बटाती हैं, लेकिन यह मुख्यतः तब देखा जाता है जब पुरुष कलाकार अनुपस्थित होते हैं।

ढोकरा शिल्प कला के विकास में पुरुष कलाकारों का योगदान

प्राचीन काल में ढोकरा शिल्पकला के निर्माण में मुख्य रूप से पुरुष कलाकारों का योगदान रहा है, जो अत्यधिक महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय था। उनके कठिन परिश्रम, नवाचार और सांस्कृतिक प्रतिबद्धता ने ढोकरा कला को एक विशिष्ट पहचान दिलाई। इस कला के माध्यम से न केवल भारतीय संस्कृति की विविधता को प्रदर्शित किया गया, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी भारतीय कला को मान्यता मिली। पुरुष कलाकारों की अथक मेहनत, समर्पण और रचनात्मकता के कारण आज ढोकरा कला को एक अमूल्य धरोहर के रूप में सराहा जाता है। नीचे ढोकरा लोक कला के विकास में पुरुष कलाकारों के योगदान का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

ढोकरा शिल्पकला की तकनीक में सुधार और परिष्करण

पुरुष कलाकारों ने ढोकरा कला की तकनीकी प्रक्रियाओं को न केवल संरक्षित किया, बल्कि समय के साथ इनमें सुधार और परिष्करण भी किया। प्राचीन काल में जो धातु ढलाई विधियाँ प्रचलित थीं, उन्हें पुरुष शिल्पकारों ने और अधिक सटीक और मजबूत बना दिया। उन्होंने

विभिन्न धातुओं और मिश्रणों का सही अनुपात जानकर उनका प्रभावी उपयोग किया, जिससे ढोकरा मूर्तियों की गुणवत्ता में भी महत्वपूर्ण सुधार हुआ।

ढोकरा लोक कलाकार श्री बोडकू राम सागर बताते हैं कि प्राचीन समय में धातु ढलाई की प्रक्रिया वर्तमान तकनीक से बिल्कुल भिन्न थी। उस समय पीतल के टुकड़ों को मिट्टी के कटोरे में पिघलाया जाता था, जिसे काम से जोड़ा जाता था। इसे "घैली जोरना" या "पीतल जोरना" कहा जाता था। पुराने और टूटे हुए पीतल के बर्तनों को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़कर, मोम के दस गुना अनुपात में तौलकर, इन टुकड़ों को मिट्टी के कटोरे में रखा जाता था। इसमें थोड़ी मात्रा में नमक भी मिलाया जाता था, जो पीतल को तेजी से पिघलाने और उसमें मौजूद धूल को साफ करने में मदद करता था। पीतल से भरे मिट्टी के कटोरे को काम के ऊपरी हिस्से से जोड़ दिया जाता था। इस प्रक्रिया में मोम के वाष्पित होने और पीतल के गलने का कार्य एक ही भट्टी में हो जाता था। हालांकि, पारंपरिक ढलाई विधि में कई चुनौतियाँ थीं। अक्सर ऐसा होता था कि मोम के अनुपात में पीतल कम पड़ जाता था, जिससे सारी मेहनत बेकार हो जाती थी। वहीं, कभी-कभी पीतल अधिक होने पर भी गला हुआ पीतल व्यर्थ हो जाता था। वर्तमान समय में, इस प्रक्रिया में सुधार किया गया है। अब "क्रुसिबल" का उपयोग किया जाता है, जिसमें पीतल को एक अलग भट्टी में पिघलाया जाता है। इसके बाद पिघले हुए पीतल को आवश्यकता के अनुसार पके हुए सांचे में ढाला जाता है। इस तकनीक से न केवल शिल्प खराब होने का भय समाप्त हो गया है, बल्कि धातु की बर्बादी भी रोकी जा सकी है।

ढोकरा शिल्पकला में धार्मिक और सांस्कृतिक शिल्प का निर्माण

पुरुष कलाकारों ने ढोकरा कला के प्रारंभिक चरणों में गहने और बर्तन बनाने का कार्य किया, लेकिन समय के साथ उन्होंने इस कला को धार्मिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों तक विस्तारित किया। उन्होंने किंवदंतियों के आधार पर हिंदू देवी-देवताओं, प्राचीन आदिवासी नृत्य मुद्राओं और ग्रामीण जीवन के दृश्यों को ढोकरा कला में ढालना शुरू किया। साथ ही, किंवदंतियों और लोककथाओं से प्रेरित शिल्पों का भी निर्माण किया, जो आदिवासी समाज के दैनिक जीवन और उनकी आस्थाओं का प्रतीक बने। इन कृतियों के माध्यम से पुरुष कलाकारों ने सांस्कृतिक और धार्मिक प्रतीकों को जीवंत बनाने में अहम योगदान दिया।

ढोकरा शिल्पकला के प्रचार-प्रसार में कलाकारों का योगदान

ढोकरा कला के विस्तार में पुरुष कलाकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। उन्होंने अपनी कला को स्थानीय समुदायों से बाहर ले जाकर इसे व्यापक स्तर पर लोकप्रिय बनाया। उनके निरंतर प्रयासों ने इस पारंपरिक कला को एक पेशेवर उद्योग का स्वरूप दिया। उनके द्वारा निर्मित ढोकरा शिल्प भारतीय हस्तशिल्प की पहचान बन गए। पुरुष कलाकारों के समर्पण और मेहनत के कारण यह कला न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी छाप छोड़ने में सफल रही है।

ढोकरा शिल्पकला में आधुनिकता और परंपरा का मेल

पुरुष कलाकारों ने ढोकरा शिल्प को केवल संरक्षित ही नहीं किया, बल्कि उसमें आधुनिकता का स्पर्श भी जोड़ा। आज, ढोकरा कला में न केवल पारंपरिक धार्मिक मूर्तियों का निर्माण होता है, बल्कि आधुनिक डिजाइन और सजावटी शिल्प भी बनाए जाते हैं, जो घरों और अन्य स्थानों की शोभा बढ़ाते हैं। इस तरह, उन्होंने पारंपरिक और आधुनिक दोनों दृष्टिकोणों को समाहित करते हुए ढोकरा कला को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

सामाजिक और सांस्कृतिक योगदान

पुरुष कलाकारों ने ढोकरा कला को एक व्यापारिक रूप देकर इसे सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में स्थापित किया। ढोकरा शिल्प और मूर्तियाँ न केवल सजावट के लिए महत्वपूर्ण बनीं, बल्कि इन्हें धार्मिक अनुष्ठानों और सांस्कृतिक आयोजनों का भी अभिन्न हिस्सा

बनाया गया। इसके अलावा, पुरुष शिल्पकारों ने स्थानीय समुदायों को इस कला की विधियों और उसके महत्व से अवगत कराया, जिससे यह परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित और प्रचलित रही।

ढोकरा शिल्पकला को वैश्विक पहचान दिलाने में योगदान

पुरुष कलाकारों ने ढोकरा कला को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपनी कला को मेलों, प्रदर्शनियों और शिल्प बाजारों में प्रदर्शित किया, जहाँ इसे व्यापक सराहना और वैश्विक पहचान मिली। ई कॉमर्स प्लेटफार्म के जरिए, ढोकरा कलाकारों ने न केवल भारत के पारंपरिक धातु शिल्प को विश्व मंच पर प्रस्तुत किया, बल्कि इसे एक अनमोल सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित किया।

पुरुष कलाकारों के समर्पण और योगदान ने ढोकरा कला को एक अमूल्य धरोहर के रूप में संरक्षित रखने के साथ-साथ इसे समय के साथ और भी परिष्कृत बनाया। उनके प्रयासों ने इस कला को न केवल भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान दिलाई। आज, ढोकरा कला भारतीय शिल्प की समृद्धि और गौरव का प्रतीक बन चुकी है, और इसका श्रेय उन पुरुष कलाकारों को जाता है जिन्होंने इसे जीवंत और प्रासंगिक बनाए रखने में योगदान दिया।

ढोकरा शिल्पकला में महिला कलाकारों का योगदान

ढोकरा लोक कला, जो "मोम की खोई हुई ढलाई विधि" पर आधारित है, के विकास में महिला कलाकारों का योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी रहा है। यह पारंपरिक कला, जो मुख्य रूप से सामूहिक प्रयासों पर निर्भर करती है, महिलाओं की सूक्ष्मता, निपुणता और कलात्मक दृष्टि के कारण समृद्ध और संरक्षित हुई है।

प्राचीन समय में, जब ढोकरा कलाकार अस्थायी जीवनशैली अपनाकर राजमहलों और स्थानीय सामुदायिक स्थलों पर गहने, बर्तन, और अन्य उपयोगी वस्तुएं बनाते थे, उस समय भी महिला कलाकार इन कार्यों में अपना योगदान देती थीं। वे न केवल घरेलू जिम्मेदारियां निभाती थीं, बल्कि शिल्प निर्माण की हर प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल भी होती थीं। मिट्टी तैयार करने, मोम के प्रारंभिक मॉडल पर परत चढ़ाने, और जटिल डिजाइन तैयार करने जैसे कार्यों में उनका कौशल अद्वितीय था। वर्तमान समय में महिलाओं की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। वे न केवल इस कला की पारंपरिक शैलियों को संरक्षित कर रही हैं, बल्कि नए डिजाइनों और तकनीकों को अपनाकर इसे समकालीन बाजार की मांगों के अनुरूप ढाल रही हैं। महिलाएँ ढोकरा शिल्प की सुंदरता में धार्मिक प्रतीकों, प्राकृतिक आकृतियों और सांस्कृतिक तत्वों का समावेश करती हैं, जिससे यह कला वैश्विक स्तर पर भी प्रशंसा पा रही है। इसके साथ ही, महिलाएँ अपने परिवार और समुदाय के भीतर इस कला को जीवित रखने और अगली पीढ़ी को इसका प्रशिक्षण देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वे सामूहिक कार्य में भागीदारी करके उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता को बेहतर बनाने में सहयोग देती हैं। मेलों, प्रदर्शनियों और बाजारों में सक्रिय रूप से भाग लेकर वे इस कला को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा में, ढोकरा कला ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान किया है। इस कला के माध्यम से वे न केवल अपने परिवारों की आर्थिक स्थिति को सुधार रही हैं, बल्कि समाज में अपनी पहचान भी स्थापित कर रही हैं। महिलाओं का यह योगदान केवल शिल्पकला तक सीमित नहीं है। उन्होंने ढोकरा कला को एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आयाम दिया है। वे इसे अपनी परंपराओं, विश्वासों और जीवनशैली से जोड़कर इसे आदिवासी और ग्रामीण संस्कृति की आत्मा का प्रतीक बना रही हैं।

इस प्रकार, ढोकरा लोक कला के विकास, संरक्षण और प्रसार में महिला कलाकारों की भूमिका अनिवार्य रही है। उनकी मेहनत, रचनात्मकता और समर्पण ने न केवल इस कला को समृद्ध किया है, बल्कि इसे एक ऐसी सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित किया है, जो भारतीय कला और संस्कृति के अनमोल पहलुओं को दर्शाती है।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ की ढोकरा शिल्पकला भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का एक अनमोल हिस्सा है, जो पुरुष और महिला कलाकारों के सामूहिक प्रयासों से विकसित और समृद्ध हुई है। पुरुष कलाकारों ने इस कला की तकनीकी दक्षता, धार्मिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों और वैश्विक पहचान को विस्तार दिया। उन्होंने परंपरागत विधियों को आधुनिक तकनीकों से जोड़कर इसे एक पेशेवर और प्रासंगिक स्वरूप प्रदान किया। वहीं, महिला कलाकारों ने अपनी रचनात्मकता, सूक्ष्मता और सांस्कृतिक प्रतीकों के समावेश से इस कला को अद्वितीय सौंदर्य और गहराई प्रदान की। उन्होंने पारंपरिक डिजाइनों को संरक्षित रखते हुए आधुनिक बाजार की मांगों के अनुरूप ढोकरा शिल्प को नया आयाम दिया। इसके साथ ही, यह कला महिलाओं के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक पहचान का भी माध्यम बनी।

इस प्रकार, पुरुषों और महिलाओं के सामूहिक योगदान ने ढोकरा शिल्पकला को न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी प्रतिष्ठा दिलाई। यह कला आज भारतीय संस्कृति और शिल्प कौशल का एक प्रतीक है, जो पीढ़ियों तक संरक्षित और प्रासंगिक बनी रहेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. भूपेंद्र बघेल, व्यक्तिगत साक्षात्कार 17 अप्रैल 2024 भेलवापदरपारा बस्ती, कोंडागावं, छत्तीसगढ़
2. फूल सिंह सागर, व्यक्तिगत साक्षात्कार 17 अप्रैल 2024 भेलवापदरपारा बस्ती, कोंडागावं, छत्तीसगढ़
3. बोडकू राम सागर, व्यक्तिगत साक्षात्कार 17 अप्रैल 2024 भेलवापदरपारा बस्ती, कोंडागावं, छत्तीसगढ़
4. मीरा ठाकुर, व्यक्तिगत साक्षात्कार 17 अप्रैल 2024 भेलवापदरपारा बस्ती, कोंडागावं, छत्तीसगढ़
5. रामचरन पोयाम, व्यक्तिगत साक्षात्कार 17 अप्रैल 2024 भेलवापदरपारा बस्ती, कोंडागावं, छत्तीसगढ़
6. ढोकरा धातु ढलाई की एक प्राचीनकला-21-May-2020-<https://hindi-livehistoryindia-com>
7. छत्तीसगढ़ की कला व संस्कृति 09-Dec&2022 & <https://cgpsc tyari-com>
8. छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति-<https://shodhsamagam-com>
9. Kocher, R. (2003), "Dhokra: The Traditional Art of Metal Casting", New Delhi: Nistads Dhokra
10. ढोकरा धातु इल्लाई और इसका हड़प्पा कनेक्सन-25-Feb & 2021 & <https://www-peepultree-world>
11. ढोकरा शिल्प कला- 08-Nov & 2018 <https://www-drishtiiias-com> 8.
12. संस्कृति और विरासतए जिला दुर्गए छत्तीसगढ़ शासन-<https://durg-gov-in>
13. बस्तर के घड़वा धातुशिल्प रूप और संदर्भ-13-Nov 2018 & <https://wwwsahapedia-org>
14. डोकरा कला एक स्थायी जनजातीय विरासत है-14-□□□□□□-2021-<https://indiacurrents-com>
15. छत्तीसगढ़ की कला व संस्कृति 09-Dec&2022 & <https://cgpsc tyari-com>